अंखियाँ हरि दरसन की प्यासी

अंखियाँ हरि दरसन की प्यासी,

देख्यौ चाहति कमल नैन कौ,
निसि-दिन रहति उदासी

आए ऊधै फिरि गए आँगन,
डारि गए गर फांसी

केसरि तिलक मोतिन की माला,
वृन्दावन के बासी

काहू के मन को कोउ न जानत,
लोगन के मन हांसी

सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौ,
करवत लैहौं कासी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/14549/title/akhiyan-hari-darshan-ki-pyaasi

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |